डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

पाठ्य सामग्री,

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा, प्रथम वर्ष, द्वितीय पत्र के लिए।

दिनांक- 04.08.2020

व्याख्यान संख्या-28 (कुल संख्या-64)

{ * छात्रगण ध्यान दें ! मेरे द्वारा ऑनलाइन पाठ्य सामग्री के रूप में प्रस्तुत जिन व्याख्यानों में सप्रसंग व्याख्या है, उनमें से सूरदास के पदों की व्याख्या में सम्पूर्ण पद को उद्धृत किया गया है। इसी प्रकार तुलसीदास के रामचरितमानस के अवतरण में एक दोहे के अन्तर्गत आने वाली सभी चौपाइयों को ले लिया गया है। इन व्याख्याओं में 3-4 अथवा उससे भी अधिक पृष्ठ संख्या देखकर यह न समझें कि इतनी बड़ी व्याख्या लिखनी है। वस्तुतः इन व्याख्याओं में पूरा प्रसंग इसलिए उद्धृत किया गया है ताकि छात्रों को समग्रता में जानकारी हो सके। परीक्षा में इनमें से कोई अंश पूछने पर अपेक्षाकृत परिपूर्ण जानकारी रहने पर उस अंश की व्याख्या समुचित रूप से की जा सकती है। समग्र पद की व्याख्या उपलब्ध रहने से दूसरा लाभ यह है कि भावार्थ लेखन के अतिरिक्त दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर के रूप में भी इनका उपयोग किया जा सकता है।}

* सप्रसंग व्याख्या

मूल अवतरण:-

डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

कान्हहिँ बरजति किन नँदरानी।...

... आवति सूर उरहने के मिस ,देखि कुँवर मुसुकानी।।

प्रस्तुत व्याख्येय पद्यावतरण के रचयिता हिन्दी साहित्याकाश के देदीप्यमान नक्षत्र महाकवि सूरदास हैं। प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'स्वर्ण-मंजूषा' में संकलित है।

प्रस्तुत प्रसंग गोपियों द्वारा यशोदा जी से कृष्ण की शिकायत का है। शिकायत में भी अनुराग का मनोहर वर्णन महाकवि सूरदास ने किया है।

गोपियाँ यशोदा जी से शिकायत करती हुई कहती हैं कि हे नंदरानी! तुम कृष्ण को रोकती क्यों नहीं हो? हम लोग तो एक ही गाँव के निवासी हैं। नंद की मर्यादा कहाँ तक रखें अर्थात् उनका लिहाज कब तक करें ! तात्पर्य यह है कि श्रीकृष्ण की हरकतें इतनी बढ़ गयी हैं कि नंद जी के प्रति संकोच भाव के कारण कब तक उसकी शिकायत न करें ! तुम जो कहती हो कि मेरा कृष्ण गंगाजल की भाँति पवित्र है, तो यह बात ठीक नहीं है, क्योंकि वह बाहर तो सुंदर किशोर और तरुण बनकर रास्ते और घाट पर दान लेने वाले हैं। तात्पर्य यह है कि सुंदरियों के रूप-रस की चाहत में वे रास्तों पर और घाटों पर सदा उपस्थित रहते हैं। कमल की पंखुड़ियों के समान सुंदर आँखों वाले कृष्ण की बातें विचित्र होती हैं। वे रसपूर्ण और सुंदर वाणी में बातचीत करते हैं; परंतु यह

डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

कितना बड़ा आश्चर्य है कि तुम्हारे सामने ऐसे बोलते हैं जैसे अभी भी तुतला रहे हों ! गोपियों की शिकायत सुनकर यशोदा जी को विश्वास नहीं होता और वह कहती है कि कहाँ मेरा नन्हा कृष्ण और कहाँ तुम अर्थात् युवती गोपियाँ ! यह विपरीत बात नहीं जानी जाती है। तात्पर्य यह है कि युवती गोपियों के साथ बाल कृष्ण के द्वारा अनुरागपूर्ण छेड़खानी वाली बातें कैसे हो सकती हैं। सूरदास जी कहते हैं कि गोपियाँ आती तो उलाहना देने के बहाने हैं, परंतु कृष्ण को देखकर मुस्कुराने लगती हैं।

प्रस्तुत पद्य के परिशीलन से स्पष्ट ज्ञात होता है कि इसमें मानव मन के कुशल चितेरे महाकवि सूर ने बाल्यावस्था से किशोरावस्था की ओर बढ़ रहे श्रीकृष्ण के द्वारा की जाने वाली अनुरागपूर्ण बातें तथा यशोदा के सामने व्यक्त उनके भोलेपन के माध्यम से उनकी बादवाली बहुआयामी लीलाओं का कुशल संकेत किया है। अपनी संतान के प्रति माता के सहज स्नेह के साथ सहज विश्वास का सहज चित्रण दर्शनीय है, जो कि अंधविश्वास का पर्याय हो गया है। 'बाट-घाट कौ दानी' से गोपियों का तात्पर्य है कि जैसे दान लेने वाले रास्तों पर तथा नदी के घाटों पर इस आशा में पहले से उपस्थित रहते हैं कि आते-जाते लोगों से उन्हें दान प्राप्त होता रहेगा, उसी तरह श्रीकृष्ण रूप का दान प्राप्त करने की आशा में डटे रहते हैं। यह गोपियों के द्वारा प्रयुक्त व्यंग्य वचन है। श्रीकृष्ण की चतुराई गोपियाँ यह कहकर व्यक्त करती हैं कि बाहर तो वे किशोर बल्कि उससे भी बढ़कर तरुण की तरह रसपूर्ण बातें करते हैं जो

डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

कि होती तो अत्यंत सुंदर हैं, परंतु एक गाँव का होने तथा उनकी आयु के बच्चे से वैसी बातें सुनने में विचित्र लगती हैं। हालाँकि इन गोपियों को भी श्रीकृष्ण से अनुराग है, वह भी अधिक समय उनसे दूर नहीं रह सकती है और इसीलिए वे उलाहना देने के बहाने वस्तुतः श्रीकृष्ण को देखने आती हैं और उनके द्वारा की जाने वाली अनुरागपूर्ण बातें शिकायत के बहाने भी करते हुए आनंद अनुभव करती हैं, क्योंकि उन बातों में उन्हीं गोपियों के प्रति कृष्ण के अनुराग की अनुभूति भरी हुई है, और इसलिए वे कृष्ण को देख कर मुस्कुराने लगती हैं।

प्रस्तुत पद्य में प्रयुक्त शब्द 'कानी' का मूल रूप वस्तुतः 'कानि' है, जो कि तुक के आग्रह से 'कानी' के रूप में प्रयुक्त हुआ है। इसका अर्थ लोकलज्जा, मर्यादा, लिहाज है। अंतिम पंक्ति में प्रयुक्त 'मिस' शब्द का अर्थ 'बहाना' है।